

Padma Shri



SHRI LAKHA KHAN MANGANIAR

Shri Lakha Khan Manganiar is the undisputed master of the Sindhi Sarangi, a national treasure for his contribution to Rajasthani folk music, and perhaps the greatest exponent of the 27-string sindhi sarangi. He is one of the last remaining masters of this complex instrument to carry forward the centuries-old musical tradition of Rajasthani and Multani folk and Sufi music. He is the global ambassador of the folk sarangi, having performed hundreds of international concerts over a long and illustrious career spanning over 50 years of performance history.

2. Born on 12th November, 1949 in the village of Raneri in Jodhpur district, Rajasthan, into a family of traditional musicians from the Manganiyar community, Shri Lakha Khan was trained at an early age in rendering the compositions of the Multan school of Manganiyars. His music is truly secular and straddles both the classical and folk domains, with a vast songbook that incorporates Hindu bhajans (devotional songs), Sufi kalaams, and the ancient stories and oral histories of the region that span the western Indian sub-continent. He sings in over six languages including Hindi, Marwari, Sindhi, Punjabi and Multani. Bestowed with a powerful and melodious voice that perfectly complements his instrument - the pyaledar or sindhi sarangi – Shri Lakha Khan's music transcends boundaries and invokes a spiritual oneness in the listener.

3. Shri Lakha Khan's early public performances were in the late 60's and 70's in India, and under the guidance of the late ethnomusicologist Komal Kothari, he toured Europe, UK, Russia and Japan through the 80's and 90's. He resumed international touring in 2013 with Amarrass Records organizing his first coast-to-coast US tour that year, and has since made six international tours to Denmark, Sweden, Czech Republic, Belgium, The Netherlands, Luxembourg, Finland, and two tours of United States. He has performed at notable festivals in India such as the Amarrass Desert Music Festival, Jodhpur Rajasthan International Folk Festival, and Mahindra Kabira Festival.

4. Shri Lakha Khan has released three albums on the Amarrass Records label that have been received with critical acclaim and reviews. His debut solo album 'At Home' was named the "Top 5 Rajasthani albums ever" by FROOTS magazine. 'Live in Nashville', released in 2016, received 4 Stars in Songlines. His work has been featured in The New York Times, The Independent and National Public Radio. He has been bestowed with the Sangeet Natak Akademi award for his contribution to Rajasthani folk music, he has been recognized by the Marudhara Foundation in Kolkata for his contribution to Marwadi culture, and WOMEX 2019 Showcase Artist in Tampere, Finland.



श्री लाखा खाँ मंगनियार

श्री लाखा खाँ मंगनियार सिंधी सारंगी के बेहतरीन कलाकार हैं जो राष्ट्रीय निधि के रूप में राजस्थान लोक संगीत को उनकी देन है और वह सम्भवतः 27 तार वाली सिंधी सारंगी के पुरोधा हैं। वह इस जटिल वाद्ययंत्र के अंतिम जीवित उस्ताद हैं और राजस्थानी, मुलतानी लोक संगीत और सूफी संगीत की सदियों पुरानी संगीत परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। वह पूरी दुनिया में लोक सारंगी के अग्रदूत हैं और 50 वर्ष लम्बी और प्रख्यात संगीत यात्रा में उन्होंने सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन किया है।

2. 12 नवंबर, 1949 को राजस्थान के जोधपुर जिले के रानेरी गांव में मंगनियार समुदाय के पारंपरिक संगीतकारों के परिवार में जन्मे श्री लाखा खाँ को कम उम्र में ही मंगनियारों के मुलतान घराने की बंदिशों के गायन का प्रशिक्षण दिया गया। उनका संगीत वास्तव में सर्वधर्मी है और शास्त्रीय और लोक संगीत दोनों को अपने में समेटे हुए है। उनका यह संगीत हिंदू भजन, सूफी कलाम और पश्चिमी भारतीय उप-महाद्वीप में फैले हुए इस क्षेत्र की प्राचीन कहानियों और मौखिक इतिहास वाली एक विशाल गीत-पुस्तक में आबद्ध है। वह हिंदी, मारवाड़ी, सिंधी, पंजाबी और मुलतानी सहित छह से अधिक भाषाओं में गाते हैं। श्री लाखा खाँ की नैसर्गिक रूप से बुलंद और मधुर आवाज उनके वाद्य प्यालेदार या सिंधी सारंगी से मिलकर संगीत की सीमा को लांघ जाती है और श्रोता के हृदय को आध्यात्मिक रूप से एकाकार कर देती है।

3. श्री लाखा खाँ ने भारत में अपनी गायकी का सार्वजनिक प्रदर्शन 60 और 70 के दशक के अंत में किया था। दिवंगत लोकसंगीत शास्त्री कोमल कोठारी के मार्गदर्शन में उन्होंने 80 और 90 के दशक के दौरान यूरोप, ब्रिटेन, रूस और जापान का दौरा किया। उन्होंने 2013 में फिर से अमररास रिकॉर्ड के साथ अंतरराष्ट्रीय दौरा शुरू किया और उसी वर्ष समूचे अमेरिका का दौरा किया। उसके बाद से उन्होंने डेनमार्क, स्वीडन, चेक गणराज्य, बेल्जियम, नीदरलैंड, लक्जमबर्ग, फिनलैंड के छह अंतरराष्ट्रीय दौरे और संयुक्त राज्य अमेरिका के दो दौरे किए हैं। उन्होंने भारत के प्रसिद्ध समारोह जैसे अमररास डेजर्ट म्यूजिक फेस्टिवल, जोधपुर राजस्थान इंटरनेशनल फोक फेस्टिवल और महिंद्रा कबीरा फेस्टिवल में प्रदर्शन किया है।

4. श्री लाखा खाँ ने अमररास रिकॉर्ड्स लेबल के अंतर्गत तीन एलबम रिलीज किए हैं, जिन्हें बहुत ख्याति और समीक्षा प्राप्त हुई है। उनकी पहली सोलो एल्बम 'एट होम' को फ्रूट्स मैगजीन ने अब तक के सर्वोच्च 5 राजस्थानी एल्बम में शामिल किया था। 2016 में रिलीज हुई 'लिव इन नैशविले' को सॉन्गलाइंस में 4 स्टार मिले। उनके काम को न्यूयॉर्क टाइम्स, द इंडिपेंडेंट और नेशनल पब्लिक रेडियो में प्रमुखता मिली है। उन्हें राजस्थानी लोक संगीत में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया है, उन्हें मारवाड़ी संस्कृति में उनके योगदान के लिए कोलकाता के मरुधरा फाउंडेशन और टैम्परे, फिनलैंड के वोमैक्स 2019 शोकेस आर्टिस्ट ने सम्मानित किया है।